

<b>Education, Work, and Money</b>	<b>शिक्षा, कार्य और पैसा</b>
<b>CHAPTER ONE</b>	<b>अध्याय--एक</b>
<b>What Is Education?</b>	<b>शिक्षा क्या है?</b>
-1-	- 9-
The Right Kind of Education	सही शिक्षा
The ignorant man is not the unlearned, but he who does not know himself, and the learned man is stupid when he relies on books/ on knowledge, and on authority to give him understanding. Understanding comes only through self-knowledge, which is awareness of one's total psychological process. Thus education, in the true sense, is the understanding of oneself, for it is within each one of us that the whole of existence is gathered.	अज्ञानी व्यक्ति वह नहीं है जिसने ककहरा नहीं सीखा है बल्कि वह है जो स्वयं को नहीं जानता, और एक विद्वान व्यक्ति तब मूर्ख हो जाता है जब वह समझ के लिये ग्रंथों पर, ज्ञान पर या किसी मान्यताप्राप्त व्यक्ति पर निर्भर करने लगता है। समझ तो केवल आत्म परिचय से आती है, स्वबोध से आती है अर्थात् अपने भीतर की संपूर्ण मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया के प्रति सजगता से। इस प्रकार सही अर्थों में शिक्षा है स्वयं को समझना, क्योंकि हम में से प्रत्येक में संपूर्ण अस्तित्व समाया है।
What we now call education is a matter of accumulating information and knowledge from books, which anyone can do who can read. Such education offers a subtle form of escape from ourselves and, like all escapes, it inevitably creates increasing misery. Conflict and confusion result from our own wrong relationship with people, things and ideas, and until we understand that relationship and alter it, mere learning, the gathering of facts and the acquiring of various skills, can only lead us to engulfing chaos and destruction.	आज जिसे हम शिक्षा कहते हैं वह तो पुस्तकों से सूचना और जानकारी ग्रहण करके उनका संग्रह कर लेना मात्र रह गयी है जो कि कोई भी साक्षर व्यक्ति कर सकता है। इस प्रकार की शिक्षा स्वयं से पलायन करने के चतुराईपूर्ण उपाय सुझाती है जो अन्य पलायनों की भांति ही अपरिहार्य रूप से दुख को ही बढ़ाते हैं। द्वंद्व और विभ्रम व्यक्तियों, वस्तुओं और विचारों के साथ हमारे दोषपूर्ण संबंध का परिणाम होते हैं। और जब तक हम उस संबंध को समझ कर उसमें समुचित बदलाव नहीं ले आते तब तक केवल अक्षर-ज्ञान कर लेना, तथ्यों को दिमाग में भर लेना, अनेक प्रकार की दक्षता हासिल कर लेना, यह सब हमें घोर अव्यवस्था और विनाश की ओर ही धकेलता रहेगा।
As society is now organized, we send our children to school to learn some technique by which they can eventually earn a livelihood. We want to make the child first and foremost a specialist, hoping thus to give him a secure	समाज जिस तरह से आज संगठित है, हम अपने बच्चों को स्कूल भेज देते हैं, जहां वे कोई तकनीक सीख सकें ताकि आगे चलकर वे अपना जीविकोपार्जन कर सकें। हम बच्चे को सर्वप्रथम एक विशेषज्ञ बनाना चाहते हैं और इस प्रकार उसके एक सुरक्षित आर्थिक स्थिति

economic position. But does the cultivation of a technique enable us to understand ourselves?	में पहुंच पाने की अपेक्षा करते हैं। परंतु, क्या किसी तकनीक को विकसित करना हमें स्वयं को समझने में सक्षम बनाता है।
While it is obviously necessary to know how to read and write, and to learn engineering or some other profession, will technique give us the capacity to understand life? Surely, technique is secondary; and if technique is the only thing we are striving for, we are obviously denying what is by far the greater part of life.	यह तो स्पष्ट है कि लिखना-पढ़ना व इंजीनियरिंग या कोई अन्य व्यवसाय सीखना आवश्यक है, परंतु क्या तकनीक हमें जीवन को समझने की सूझ-बूझ दे पाएगी? निश्चय ही तकनीक दूसरे स्थान पर आती है, और यदि उस तकनीक को ही हम सब कुछ मान लें जिसके लिए हम संघर्षरत रहते हैं तो हम उस चीज़ को नकार देंगे जो जीवन का कहीं अधिक महत्वपूर्ण अंश है।
Life is pain, joy, beauty, ugliness, love, and when we understand it as a whole, at every level, that understanding creates its own technique. But the contrary is not true: technique can never bring about creative understanding.	जीवन पीड़ा है, आह्लाद है, सौंदर्य है, कुरूपता है, प्रेम है और जब हम समग्र रूप से और प्रत्येक स्तर पर इसे समझ लेते हैं, तब वह समझ अपनी तकनीक स्वयं रचती है। परंतु इसका उलट सच नहीं है : तकनीक कभी रचनात्मक समझ नहीं ला सकती।
-2-	-२-
Skill In Making a Living Is Not Living Completely	जीविकोपार्जन की निपुणता ही समग्र रूप से जीना नहीं है
Present-day education is a complete failure because it has over-emphasized technique. In over-emphasizing technique we destroy man. To cultivate capacity and efficiency without understanding life, without having a comprehensive perception of the ways of thought and desire, will only make us increasingly ruthless, which is to engender wars and jeopardize our physical security. The exclusive cultivation of technique has produced scientists, mathematicians, bridge builders, space conquerors; but do they understand the total process of life? Can any specialist experience life as a whole? Only when he ceases to be a specialist.	आज शिक्षा पूरी तरह से विफल हो गई है क्योंकि इसमें तकनीक पर आवश्यकता से अधिक बल दिया जा रहा है। तकनीक पर आवश्यकता से अधिक बल देना मनुष्य को विनष्ट करना है! जीवन को जाने बिना, विचार व इच्छा के तौर-तरीकों को व्यापक रूप से समझे बिना केवल दक्षता और क्षमता को पोषित करने से हम अधिकाधिक निर्दयी बनते जाएंगे और इससे युद्ध व अपनी शारीरिक सुरक्षा का खतरा हमारे सिर पर मंडराता रहेगा। केवल तकनीक के विकास ने वैज्ञानिक, गणितज्ञ, सेतु-निर्माता और अंतरिक्ष-विजेता तो पैदा कर दिये हैं, परंतु क्या ये लोग जीवन के समग्र प्रक्रम को भी जान पाए हैं? क्या कोई विशेषज्ञ जीवन को समग्र रूप से महसूस कर सकता है? ऐसा वह केवल तभी कर सकता है जब वह मात्र एक विशेषज्ञ नहीं रह जाता।
-3-	-३-

Mere Occupation Is not Enough	केवल व्यवसाय पर्याप्त नहीं है
Technological progress does solve certain kinds of problems for some people at one level, but it introduces wider and deeper issues too. To live at one level, disregarding the total process of life, is to invite misery and destruction. The greatest need and most pressing problem for every individual is to have an integrated comprehension of life, which will enable him to meet its ever-increasing complexities.	तकनीकी प्रगति कुछ लोगों के लिए किसी स्तर पर कुछ प्रकार की समस्याओं का निदान तो कर देती है, परंतु साथ ही वह कुछ व्यापक और गहरे मुद्दे भी जोड़ देती है। जीवन की समग्र प्रक्रिया को उपेक्षित करते हुए केवल किसी एक स्तर पर जीना दुख और विनाश को आमंत्रण देना है। हर व्यक्ति की सबसे बड़ी आवश्यकता और सबसे बड़ी समस्या है जीवन का समग्र बोध जो उसे निरंतर बढ़ती जटिलताओं का सामना करने में सक्षम बनाए।
Technical knowledge, however necessary, will in no way resolve our inner, psychological pressures and conflicts; and it is because we have acquired technical knowledge without understanding the total process of life that technology has become a means of destroying ourselves. The man who knows how to split the atom but has no love in his heart becomes a monster.	तकनीकी ज्ञान चाहे जितना आवश्यक हो, वह किसी भी तरह हमारे आंतरिक मनोवैज्ञानिक दबाव और द्वंद्व को दूर नहीं कर सकता। और चूंकि जीवन के संपूर्ण प्रक्रम को समझे बिना हमने तकनीकी ज्ञान अर्जित कर लिया है, अतः तकनीक हमारे लिए भस्मासुर बन गई है। जो व्यक्ति अणु का विखंडन करना तो जानता हो परंतु उसके हृदय में प्रेम न हो, तो वह राक्षस बन जाता है।
We choose a vocation according to our capacities; but will the following of a vocation lead us out of conflict and confusion? Some form of technical training seems necessary; but when we have become engineers, physicians, accountants— then what? Is the practice of a profession the fulfillment of life? Apparently with most of us it is. Our various professions may keep us busy for the greater part of our existence; but the very things that we produce and are so entranced with are causing destruction and misery. Our attitudes and values make of things and occupations the instruments of envy, bitterness and hate.	हम अपनी क्षमता के अनुसार अपनी आजीविका चुनते हैं, परंतु क्या उस आजीविका के चलते हम द्वंद्व और विभ्रम से मुक्त रह पाते हैं? कुछ प्रकार का तकनीकी प्रशिक्षण तो आवश्यक है, परंतु जब हम इंजीनियर, चिकित्सक या लेखाकार बन जाते हैं तब होता क्या है? क्या कोई आजीविका अपना लेना जीवन में संपूर्णता ला पाता है? हम में से अधिकांश के लिए लगता तो ऐसा ही है। हमारी आजीविका हमारे अधिकांश जीवन काल के लिए भले ही हमें व्यस्त कर दे परंतु जो चीजें हम बनाते हैं और जो बड़ी सम्मोहक भी प्रतीत होती है, वे विनाश और दुख का कारण बन रही हैं। हमारी प्रवृत्तियों और हमारे मूल्यों के चलते वस्तुएं व आजीविकाएं ईर्ष्या, कटुता और घृणा के साधन बन रही हैं।
Without understanding ourselves, mere occupation leads to frustration, with its inevitable escapes through all kinds of mischievous activities.	स्वयं को समझे बिना केवल आजीविका कमाना हमें कुंठा व खिन्नता की ओर ले जाता है और फिर बस शुरू होता है पलायन, तरह-तरह की अनिष्टकारी गतिविधियों का सहारा लेते हुए।

-4-	-४-
The Individual or the System	व्यक्ति या प्रणाली
Education should not encourage the individual to conform to society or to be negatively harmonious with it, but help him to discover the true values which come with unbiased investigation and self-awareness. When there is no self-knowledge, self-expression becomes self-assertion, with all its aggressive and ambitious conflicts. Education should awaken the capacity to be self-aware and not merely indulge in gratifying self-expression.	शिक्षा द्वारा व्यक्ति को समाज का अनुकरण करने या उसके साथ विषमतः, नकारते हुए सामंजस्य करने के लिये नहीं उकसाया जाना चाहिए, बल्कि उसे तो व्यक्ति के उन वास्तविक मूल्यों को खोजने में सहायक बनना चाहिए जो तथ्यों की निष्पक्ष जांच और अपने प्रति सजगता से आती है। आत्म परिचय के अभाव में, स्वबोध के अभाव में आत्म-प्रदर्शन अपने तमाम आक्रामक और महत्वाकांक्षी द्वंद्वों के साथ स्वाग्रह के रूप में उभरता है। शिक्षा व्यक्ति की स्वयं के प्रति सजग रहने की क्षमता बढ़ाए, न कि आत्म-प्रदर्शन की संतुष्टि में उसे लिप्त रखे।
What is the good of learning if in the process of living we are destroying ourselves? As we are having a series of devastating wars, one right after another, there is obviously something radically wrong with the way we bring up our children. I think most of us are aware of this, but we do not know how to deal with it.	भला वह शिक्षा किस काम की जिसे पाकर हम अपनी दिनचर्या में स्वयं को ही नष्ट कर रहे हैं? इस संसार में उजाड़ देने वाले युद्ध और एक के बाद एक दंगा--यह शृंखला चलती ही रहती है। इससे स्पष्ट हो जाता है कि बच्चों के पालन-पोषण के तौर-तरीकों में मूलभूत त्रुटि हो रही है। मैं समझता हूँ कि हम में से अधिकतर लोगों को इसका भान तो है परंतु यह मालूम नहीं है कि इससे निपटा कैसे जाय।
Systems, whether educational or political, are not changed mysteriously; they are transformed when there is a fundamental change in ourselves. The individual is of first importance, not the system; and as long as the individual does not understand the total process of himself, no system, whether of the left or of the right, can bring order and peace to the world.	शैक्षिक हो या राजनैतिक, कोई भी प्रणाली जादुई तौर पर नहीं बदल जाती। उसमें बदलाव तभी आता है जब हम में बुनियादी बदलाव आता है। प्राथमिक महत्त्व व्यक्ति का है, प्रणाली का नहीं और जब तक व्यक्ति अपनी ही संपूर्ण प्रक्रिया को समझ नहीं लेता तब तक कोई भी प्रणाली संसार में शांति और व्यवस्था ला नहीं सकती--चाहे वह वामपंथी हो या दक्षिणपंथी।
-5-	-५-
The Function of Education	शिक्षा का कार्य
The right kind of education is concerned with individual freedom, which alone can bring true cooperation with the whole,	सही प्रकार की शिक्षा का सरोकार व्यक्ति की स्वतंत्रता से होता है क्योंकि यही संपूर्ण जगत

with the many; but this freedom is not achieved through the pursuit of one's own aggrandizement and success. Freedom comes with self-knowledge, when the mind goes above and beyond the hindrances it has created for itself through craving its own security.	के साथ एवं अनेकानेकों के साथ भी वास्तविक सहयोग ला सकती है। परंतु यह स्वतंत्रता अपनी ही बढ़ा-चढ़ाकर हांकने और सफलता का पिछलग्गू बनने से प्राप्त नहीं की जा सकती। स्वतंत्रता तो आत्म परिचय से आती है, जब मन अपनी सुरक्षा के लिए अपने ही द्वारा निर्मित अवरोधों से ऊपर और -परे चला जाता है।
It is the function of education to help each individual to discover all these psychological hindrances, and not merely impose upon him new patterns of conduct, new modes of thought. Such impositions will never awaken intelligence, creative understanding, but will only further condition the individual. Surely, this is what is happening throughout the world, and that is why our problems continue and multiply.	शिक्षा का कार्य है प्रत्येक व्यक्ति की इन तमाम मनोवैज्ञानिक अवरोधों के अनावरण में सहायता करना, न कि उसके ऊपर आचरण के नये तरीके और विचार के नये ढंग थोपना। यह थोपना उनमें कभी प्रज्ञा और रचनात्मक समझ नहीं जगा सकता, बल्कि उसे और अधिक प्रभावग्रस्त बना देता है। वस्तुतः संसार में यही कुछ रहा है और इसलिए हमारी समस्याएं न केवल जस-की-तस हैं, बल्कि उनमें वृद्धि हो रही है।
-6-	-६-
Are Our Children Our Property?	हमारे बच्चे क्या हमारी संपत्ति हैं?
It is only when we begin to understand the deep significance of human life that there can be true education; but to understand, the mind must intelligently free itself from the desire for reward which breeds fear and conformity. If we regard our children as personal property, if to us they are the continuance of our petty selves and the fulfillment of our ambitions, then we shall build an environment, a social structure in which there is no love, but only the pursuit of self-centered advantages.	जब हम मानव-जीवन का गहन-गंभीर महत्त्व समझने लगेंगे, केवल तभी सही अर्थ में शिक्षा का आरंभ होगा। परंतु इसे समझने के लिए मन को प्रतिफल पाने की लालसा से प्रज्ञापूर्वक उबरना होगा, क्योंकि यही लालसा हममें भय और अनुकरण का बीज बोती है। यदि हम अपने बच्चों को अपनी व्यक्तिगत संपत्ति समझ लेते हैं, यदि हमने उन्हें अपने क्षुद्र अहं की निरंतरता और महत्त्वाकांक्षा की पूर्ति का साधन समझ लिया है, तो हम एक ऐसा वातावरण, एक ऐसा सामाजिक ढांचा बना रहे हैं जिसमें प्रेम नहीं है, वहां होता है बस मैं और मेरा फायदा।
-7-	-७-
What Is Our Necessity?	हमारी आवश्यकताएं क्या हैं?
What is our necessity? According to that, you will have universities, schools, examinations or no examinations. But to	क्या हैं हमारी आवश्यकताएं? तदनुसार ही तो आपके विश्वविद्यालय, विद्यालय और

merely talk narrowly about linguistic divisions seems to me utterly infantile. What we will have to do as mature human beings—if there are such entities existing—is to go into this problems. Do you want your children to be educated to be glorified clerks, bureaucrats, leading utterly miserable, useless, futile lives, functioning as machines in a system? Or, do you want integrated human beings who are intelligent, capable, fearless? We will find out, probably, what we mean by "intelligence." The mere acquisition of knowledge is not intelligence, and it does not make an intelligent human being. You may have all the technique, but that does not necessarily mean that you are an intelligent, integrated human being.	परीक्षा-प्रणाली बनेंगे। परंतु संकीर्णतापूर्वक भाषाई विभाजन की केवल बातें करना मुझे बचकाना लगता है। यदि हममें इसी प्रकार का व्यक्तित्व विद्यमान रहा तो एक वयस्क के रूप में हम इसी प्रकार समस्याग्रस्त होते रहेंगे। क्या आप अपने बच्चों को एक संपन्न लिपिक या एक नौकरशाह बनने के लिए शिक्षित करना चाहते हैं ताकि वे किसी यंत्र का कलपुर्जा बनकर बिल्कुल बेचारगी में बेकार और व्यर्थ जीवन बिताते रहें? या आप उसे एक पूर्ण व्यक्ति बनाना चाहते हैं जो प्रज्ञावान हो, सक्षम हो और भयरहित हो? हम शायद आगे इस पर विचार कर पता लगा पाएं कि 'प्रज्ञा' से हमारा अभिप्राय क्या है। केवल ज्ञानार्जन प्रज्ञा नहीं है, और न ही इसके ज़रिये कोई प्रज्ञावान बन पाता है। हो सकता है कि आपके पास तमाम तरह की तकनीक आ जाए, परंतु यह कोई ज़रूरी नहीं कि आप एक प्रज्ञावान और समग्रता में जीने वाले व्यक्ति भी हों।
-8-	-८-
Knowledge Is Accumulation of the Past: Learning Is Always in the Present	ज्ञान है अतीत का संचयन परंतु सीखना सदा वर्तमान की क्रिया है
So, there is a difference between acquiring knowledge and the act of learning. You must have knowledge and the act of learning. You must have knowledge; otherwise you will not know where you live, you will forget your name, and so on. So at one level knowledge is imperative, but when that knowledge is used to understand life—which is a movement, which is a thing that is living, moving, dynamic, every moment changing—when you cannot move with life, then you are living in the past and trying to comprehend the extraordinary thing called life. And to understand life, you have to learn every minute about it and never come to it having learned.	इस प्रकार ज्ञान प्राप्त करने और सीखने की क्रिया में अंतर है। आप में ज्ञान भी होना चाहिए और सीखने की क्रिया भी। ज्ञान आप में इसलिए होना चाहिए जिससे आप को मालूम रहे कि आप कहां रहते हैं, आपको अपना नाम याद रहे, आदि आदि। इस प्रकार किसी स्तर पर तो ज्ञान अनिवार्य होता है, परंतु यह ज्ञान जब जीवन समझने के लिये प्रयुक्त किया जाने लगे—इस जीवन को समझने के लिये जो एक प्रवाह है, ऐसा कुछ जो जी रहा है, गतिशील है, क्रियाशील है, जो पल पल परिवर्तनशील है—जब आप ऐसे जीवन के साथ चल नहीं पाते, तब आप अतीत में जाने लगते हैं और जीवन जैसी अद्भुत चीज़ को ज्ञान से समझने का प्रयत्न करने लगते हैं। परंतु, जीवन को समझने के लिये इसके बारे में पल प्रतिपल सीखना होगा। सीखे-सिखाये बनकर कभी इसे सीखने मत जाइये।
<b>CHAPTER TWO</b>	<b>अध्याय दो</b>